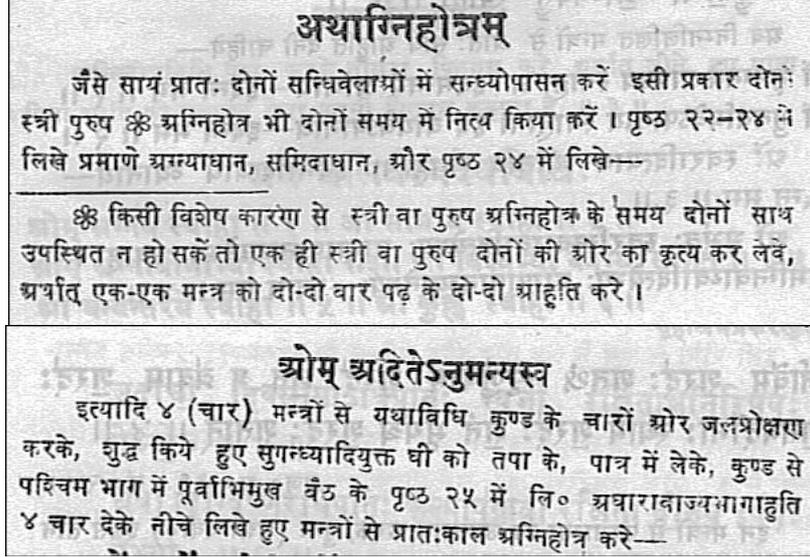
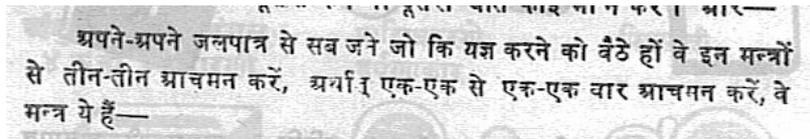


## Agnihotram or Nitya Yajna (As per Maharishi Dayanand's Sanskar Vidhi)



Like Sandhya is performed in both the Sandhi Velas (Dawn and Dusk), both female and male (\* If either male or female of the house is unable to perform Agnihotra due to some unknown reason or unforeseen circumstances then one of person present at the Yajna sthan, should do two Ahutis or oblations by reading the mantra twice) should do Agnihotra regularly. Agnihotra should be done by following Page 22-24 (Sanskaar Vidhi published by Arsha Sahitya Prachaar trust) as follows:

1. Achmaan and Anga Sparsha - People sitting to perform Yajna should do the three Achmaans with the below three Mantras (Shathpath Brahman Pratham Kand, Pratham Adhyaya, Pratham Brhman, 1-10 Kandika has recommended the use of Jal).



ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥ इससे एक,  
 ओं अमृताविधानमसि स्वाहा ॥२॥ इससे दूसरा,  
 ओं सत्यं यज्ञः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ ३ ॥  
 इस से तीसरा आचमन करके, तत्पश्चान् नीचे लिखे मन्त्रों से जल [ले]  
 करके अङ्गों का स्पर्श करे—  
 ओं वाङ्मस्रास्येऽस्तु ॥ इस मन्त्र से मुख,  
 ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र,  
 ओं अक्षणोर्मे चक्षुरस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों आँखें,  
 ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों कान,  
 ओं बाह्वोर्मे बजमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों बाहु,  
 ओम् ऊर्वोर्मऽओजोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों जंघा, और—  
 ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥

## 2. Agnyadhan

ओं भूर्भुवः स्वः ॥  
 इस मन्त्र का उच्चारण करके ब्राह्मण, क्षत्रिय वा वैश्य के घर से अग्नि  
 ला अथवा घृत का दीपक जला, उस से कपूर में लगा, किसी एक पात्र में घर  
 उस में छोटी-छोटी लकड़ी लगा के यजमान वा पुरोहित उस पात्र को दोनों  
 हाथों से उठा, यदि गर्म हो तो चिमटे से पकड़ कर अगले मन्त्र से अग्न्याधान  
 करे। वह मन्त्र यह है—

(After lighting of Diya with the Agni from Brahmin, Shatriya or Vaisha's place or in other words Agni from a Dwijas place or simply light the Diya with Ghee in it; put some Kapoor or camphor in a spoon and light it with the Diya's Agni. Put the Kapoor in a utensil e.g. steel plate, with small samidhas. Then either the Yajman or Purohit should lift the utensil with both hands and do Agnyadhan in the Hawan Kund with the mantra below)

ओ भूर्भुवः स्वर्धौरिव भूम्ना पृथिवीव व्वरिष्णा ।  
 तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्टेऽग्निमन्त्रादमुन्नाद्यायादधे ॥ १ ॥  
 य० अ० ३ । म० ५ ॥

With the next mantra Agni should be inflamed.

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूत्तं सत्सृजेथामयं च ।  
 अस्मिन्सुधस्थे अद्युत्तरस्मिन् विश्वं देवा यजमानश्च सीदत ॥२॥  
 यजु० अ० १५ । म० ५४ ॥

3. Samidadhan are with three 8 angul length and dipped in Ghee samidhas(\* note that Maharishi has not inculcated the Panch Grith Ahuti in the Nitya Yajna. It is only for the Sanskaar yajnas).

ओं अयं त इधम आत्मा जातवेदस्तेनेधस्त्र वर्धस्व चेद्द वर्द्धय  
 चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥  
 इदमग्नये जातधदसे—इदन्न मम ॥ १ ॥ इस मन्त्र से एक,

The first one with the above mantra

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् ।  
आस्मिन् हव्या जुहोतन, स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदन्न मम ॥ २ ॥  
इस से और—  
सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन ।  
अग्नये जातवेदसे, स्वाहा ॥  
इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम ॥ ३ ॥  
इस मन्त्र से अर्थात् इन दोनों मन्त्रों से दूसरी,

The second one is with the above two mantras

तन्त्वा समिद्धिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि ।  
बृहच्छ्रौंचा यविष्ठय, स्वाहा ॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे—इदन्न मम ॥४॥  
यजु० अ० ३ । म० १, २, ३ ॥  
इस मन्त्र से तीसरी समिधा की आहुति देवें ।

The third one is with the above mantra

#### 4. Jalprokshan (Jal Sinchan)

Water is taken in the anjali (cupped palm) and sprinkled in all the 4 directions of the Hawan Kund:-

The first sinchan is done in the East direction starting from South to North.

The second sinchan is done in the West direction starting from South to North.

The third sinchan is done in the North direction starting from West to East.

After the fourth mantra, sinchan is done by starting from South-East corner of the Hawan Kund and completing the circle.

तत्पश्चात् वेदी के पूर्व दिशा आदि और अञ्जलि में जल लेके चारों ओर छिड़कावें । उसके ये मन्त्र हैं—  
ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ॥ इस मन्त्र से पूर्व,  
ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ इससे पश्चिम,  
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥ इससे उत्तर, और  
ओं देव' सवितुः प्र सुव' यज्ञं प्र सुव' यज्ञपतिं भगायं ।  
दिव्यो गन्धर्वः केंतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः  
स्विदतु ॥ ४ ॥  
यजु० अ० ३० । म० १ ॥  
इस मन्त्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़कावे ।

#### 5. Agharavajyahuti & Agyabhagahuti (Ghee oblations only)

The first ahuti is given in the North side of the Kund starting from West to East.

The second Ahuti is given in the South side again starting from West to East.

The third and fourth ahutis are given in the middle of the Hawan Kund.

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदन्न मम ॥ १ ॥  
 इस मन्त्र से वेदी के उत्तर भाग अग्नि में  
 ओं सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय—इदन्न मम ॥  
 इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में प्रज्वलित समिधा पर आहुति देनी ।  
 तत्पश्चात्—  
 ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये—इदन्न मम ॥ ३ ॥  
 ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय—इदन्न मम ॥ ४ ॥  
 इन दोनों मन्त्रों से वेदी के मध्य में दो आहुति देनी ।

6. Pratahakaal Ahuti – Ghee + Samagri (\* if both Pratahakaal and Sayankaal yajnas are done together i.e. at one time then start with the ahuti of the most prominent kaal; e.g. if the yajna is done at 2:00pm then Sayankaal ahuti is given first with Pratahakaal ahuti to be followed later).

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ १ ॥  
 ओं सूर्या वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥  
 ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ३ ॥  
 ओं सृजुदेवेन सवित्रा सृजुरुषसेन्द्रवत्या ।  
 जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥  
 ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ॥ इदमग्नये प्राणाय—इदन्न मम ॥ १ ॥  
 ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ॥ इदं वायवेऽपानाय—इदन्न मम ॥ २ ॥  
 ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ॥ इदमादित्याय व्यानाय—  
 इदन्न मम ॥ ३ ॥  
 ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाट्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।  
 इदमग्निवाट्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः—इदन्न मम ॥ ४ ॥  
 ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो स्वाहा ॥ ५ ॥  
 ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासन्ते ।  
 तया मामृदा मेधयाऽन्नं मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥ ६ ॥  
 ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।  
 यद्भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा ॥ ७ ॥  
 ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽन्नस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।  
 युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्ति विधेम स्वाहा ॥ ८ ॥

Gayatri Mantra

(Then 3 purna ahuti if only doing Pratahakaal Yajna otherwise as below)

Om Vishwani deva

Gayatri Mantra

Om Vishwani Deva

7. Sayankaal Ahuti - Ghee + Samagri

ओम् अग्निज्योतिर्ज्योतिर्ग्निः स्वाहा ॥ १ ॥  
 ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥  
 ओम् अग्निज्योतिर्ज्योतिर्ग्निः स्वाहा ॥ ३ ॥  
 इस मन्त्र को मन से उच्चारण करके तीसरी आहुति देनी—  
 ओं सृजृदेवेन सवित्रा सृजूरान्द्रेन्द्रवत्या ।  
 जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥  
 ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ॥ इदमग्नये प्राणाय—इदन्न मम ॥ १ ॥  
 ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ॥ इदं वायवेऽपानाय—इदन्न मम ॥ २ ॥  
 ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ॥ इदमादित्याय व्यानाय—  
 इदन्न मम ॥ ३ ॥  
 ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।  
 इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः—इदन्न मम ॥ ४ ॥  
 ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥ ५ ॥  
 ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।  
 तया मामहा मेधयाऽन्नं मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥ ६ ॥  
 ओं विश्वानि देव सवितर्दृशितानि परां सुव ।  
 यद्भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा ॥ ७ ॥  
 ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वृयुनानि विद्वान् ।  
 वृयोध्युस्सज्जुहुराणमेनो भूर्यिष्ठां ते नम उक्ति विधेम स्वाहा ॥ ८ ॥

**Gayatri Mantra and then Purna Ahuti**

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ॥  
 ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ॥  
 ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ॥

**Few points to note:**

- Nitya Yajna or Agnihotram is what we commonly refer to Dainik Yajna. Please note that Maharishi has not termed Agnihotra as "Dainik Yajna" anywhere.
- Our commonly called Vishesha Yajna is called Pakshik Yajna (done at the starting of the Shukla or Krishna paksh. We normally called it ujjari or andheri in Fiji's language).
- The procedure carried out for the Sanskaars has been named as per the Sanskaar which does not include Nitya Yajna in it. In other words it does not include Pratahakaal and Sayankaal ahutis.

- There is no Udbodhan inculcated by the Maharishi in any of the Yajnas.
- Maharishi has recommended the use of Ishwar Stuti Prathna Upasana, Swastivachan and Shantikarnam after the Nitya Yajna for those who unfortunately are unable to perform Yajna every day. Please note that Ishwar Stuti Prathna Upasana, Swastivachan and Shantikarnam are done before Agnyadhan when performing Sanskaars.

इस प्रकार पक्षयाग, अर्थात् जिस के घर में अभाग्य से अग्निहोत्र न होता हो तो सर्वत्र पक्षयागादि में पृष्ठ १५-१७ में लिखे प्रमाणों यज्ञकुण्ड, यज्ञसामग्री, यज्ञमण्डप, पृष्ठ २२-२४ में लि० अग्न्याम्बान, समिदावान, पृष्ठ २५ में लि० आघारावाज्यभागाहुति और पृष्ठ २४ में लिखे प्रमाणों वेदी के चारों ओर जल

सेचन करके, पृष्ठ ४-१४ में लिखे प्रमाणों ईश्वरोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्ति-करण भी यथायोग्य करें।

- Agnyadhan has nowhere been recommended by the Maharishi to be done by putting burning camphor via spoon by all participants into the havan kund as we are not doing kapooradhan. Instead it should be done as explained above in the Agnyadhan section.
- Maharishi has recommended at least 16 ahuti by each person in each Pratahakaal and Sayankaal yajnas (Satyarth Prakash Ch.3). One can offer as many ahutis as he/she desires, in addition to these 32 ahutis. The extra ahutis can be given with Gayatri and Vishwani Deva mantras alternatively.
- Ahutis can only be given with Ved Mantras (Rig Vedadi Bhashya Bhumika; Ved Vishay Vichaar). None of the Upanishads or other authoritative scriptures mantras can be used for ahutis (there are few exceptions with the porushay ahuti of Griha Sutras)

भाषार्थ—प्र०—यज्ञ में वेदमन्त्रों को छोड़के दूसरे का पाठ करें तो क्या दोष है ?  
उ०—अन्य के पाठ में यह प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता। ईश्वर के वचन से जो सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, सो अन्य के वचन से कभी नहीं हो सकता, क्योंकि जैसा ईश्वर का वचन सर्वथा प्रति-

रहित सत्य होता है वैसा अन्य का नहीं। और जो कोई वेदों के अनुकूल अर्थात् आत्मा की बुद्धि, आप्त पुरुषों के ग्रन्थों का बोध और उनकी शिक्षा से वेदों को यथावत् जानके कहता है, उसका भी वचन सत्य ही होता है। और जो केवल अपनी बुद्धि से कहता है वह ठीक-ठीक नहीं हो सकता।<sup>१</sup> इससे यह निश्चय है कि जहाँ-जहाँ सत्य दीखता और सुनने में आता है, वहाँ-वहाँ वेदों में से ही फैला है, और जो-जो मिथ्या है सो-सो वेद से नहीं, किन्तु वह जीवों ही की कल्पना से प्रसिद्ध हुआ है, क्योंकि जो ईश्वरोक्त ग्रन्थ से सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, सो दूसरे से कभी नहीं हो सकता। इस विषय में मनु का प्रमाण है कि—

(त्वमे०) मनुजी से ऋषि लोग कहते हैं कि स्वयंभू जो सनातन वेद हैं, जिनमें असत्य कुछ भी नहीं, और जिनमें सब सत्यविद्याओं का विधान है, उसके अर्थ को जाननेवाले केवल आप ही हैं ॥ १ ॥

(चानु०) अर्थात् चार वर्ण, तीनों लोक, चार आश्रम, भूत, भविष्यत् और वर्तमान आदि की सब विद्या वेदों से ही प्रसिद्ध होती हैं ॥ २ ॥ क्योंकि—

(विभत्ति०) यह जो सनातन वेदशस्त्र है, सो सब विद्याओं के दान से सम्पूर्ण प्राणियों का धारण

और सब सुखों को प्राप्त कराता है, इस कारण से हम लोग उसको सर्वथा उत्तम मानते हैं, और इसी प्रकार मानना भी चाहिए, क्योंकि सब जीवों के लिए सब सुखों का साधन यही है ॥ ३ ॥